

इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ धुळे.

—: इस्त लिखित ग्रंथ संग्रह :—

ग्रंथ क्रमांक ४१०/५६६ (५२५)

ग्रंथ नाम प्राज्वल

विषय कथा पुराणे

मागन नीधवेनी शीत ॥ वैसें जागोनी समस्त ॥ घोनग
जबल वीतेये ॥ भयेय कीत ॥ व्याकुले ॥ व्याजागोनी
ना जायेण प्रताप ॥ आताको पोनी देईल आप ॥ येण आप
धाके भलान मुख ॥ अती संकाम ॥ भये भीत ॥ ८॥ वैसे
देखोनी सायी स्छीती ॥ सपनेतु एका रुपामुती ॥ अनुभा
ज को पनयेचीती ॥ आभीत वे शांती ॥ ना जायेणाची ॥ ९॥
भोका ॥ बीसाये शक कु ॥ ममादी देवः प्राह प्रहस्य
गत विस्मये एज भाना ॥ मेह भोमदन भारत देव
व व्या ॥ गृहीत नो बळी म सुन्य मी म कुरु ध्व ॥ १०॥ ११॥
टीका ॥ छंद के का आपनाथ ॥ तही ना जायेणा सीन ये को
ध ॥ बाप नीज शांती आगा ध ॥ नमनी वी नो ध कामादी का
चा ॥ १२॥ अपका यां उपका न करीती ॥ याच नाव पनम
शांती ॥ तेशांती चीनी लखीती ॥ दावी को का प्रती ॥ पनमा
र्थ ॥ दीक्षा ॥ १३॥ १४॥

(2)

1॥

पुनर्मायायी मुक्षस्वीती ॥ पाहीजे गा पुर्ण शांती ॥ तेवा
तीची गा उक्ते गति ॥ दावीळी कां प्रती आचरोनी ॥ ८८ ॥ भ
येभीत कामादीक ॥ अस्सरा गण सांशं क ॥ हाते अभये
दाने सुख ॥ देउनी पांटेख ॥ नारायेण बोळ ॥ ८९ ॥ अहो
कामवसंतादी कस्यानी ॥ दसाक नुनी अलनी तुह्यी ॥ तु
मयेनी पदागमी ॥ अश्रमभुमी पुनीत जाली ॥ ९० ॥ आवो
अस्सना देव कोता ॥ तुह्यी मउन कात द्यता ॥ येथे आली ॥ ९१ ॥
या समस्ता ॥ पुज्य सर्वथ तुह्यी मज ॥ ९२ ॥ तुमचे जाकी
या अगमन ॥ आवस्ये के राव आही पुजन ॥ हेची आ
तु ये अतुष्टान ॥ काही बळी दाना ॥ आगी कार मासे ॥ ९३ ॥
आश्रमा आली या अतीथी ॥ जे कोही पुजान करीति ॥ हा
ची मुन्ये पुन्ये संपती ॥ अश्रम स्वीती ॥ सुन्ये होये ॥ ९४ ॥
तुह्यी न अगी कारीता पुजन ॥

28

काही न घेता बळी दान ॥ तरी हा अश्रम होई कष्ट न्ये ॥ या का
गी कृपा कनूनी पुजा व्यावी ॥ ७॥ हे सेवे की कृत पापती ॥ प
री माझी हे आगा धरांती ॥ नेही ना न येणाचे चीती ग वस्त्री
ति आसना ॥ ८॥ अक राय आती अरुवी ॥ आसोनी नीज
शांती अनुभव ॥ ज्या या न ठीग वी ॥ तो ची देवा ची देव
नी श्रयेसी ॥ ९॥ जो नी सन व वी न न सुनासी ॥ ज्या म
णत प साडी जेता पसी ॥ या भव देउनी कामासी ॥ आ
प त्या पासी ॥ राहा वी का ॥ १०॥ लोक ॥ ईधु बुव ए भये देन
न देव देवा ॥ सवीड न मारी रसा स धृणत मुच्यु ॥ नैत ही
भोर्ष पन विस्तने चि ची त्रं स्वाना ॥ मधी न नी करानत पाद प
॥ ११॥ ही का ॥ ये वं अ भये देत ना न येण ॥ श्रु मुखे वोळी का
आपण ॥ तेण कामादी अ पसंगण ॥ लाजा वी न न आधो मु
ख जा वी ॥ १२॥

3

देखो नी नीवी की स पुर्णक्षमा ॥ श्रीना नायेण हा प न मा मा
केवो स न लायं स ता दी का मा ॥ आचा ची म ही मा व जी ती
श्रुये ॥ ९८ ॥ हे क व न दे व च क व ती ॥ वी दे हा स र्व भो म भु
प ति ॥ आना ना ये णा ची नी ज नु नी ॥ का मा दी क करी ती
स द्भा वे ॥ ९९ ॥ जे ण सं तो ष श्री ना ना ये ण ॥ आ सी द्हा पा उ
प ज पु र्ण हे सी ये प री य स व न ॥ मा डी ले स पु र्ण ॥ प न मा
य सु धी ॥ १०० ॥ अ ये दे वा धी दे वा ॥ नु सी या अ वी का न भा ॥ १०१ ॥
या ॥ पा हा तो न दे खो जी स वा दे व मा नु वा ॥ मा झारी ॥ १०२ ॥
म ज का मा चे नी वा धो ॥ ब्र ह्मा क न्ये सी धु र जा ये ॥ पा रा
सु ना के ले का ये ॥ दी वा भो गुं जा ये ॥ दु र्गं धा ॥ १०३ ॥ ज्या ते
यो गी व दी ती मु गु टी ॥ जो ता प सा मा जी धु जे वी ॥ तो सी
व ला गे भो ह नी पा री ॥ फु दो नी ले गो वी ॥ वी र्य द्र व क ॥ १०४ ॥

वीष्टवृद्ध्या स्मशानी ॥ धनगवैसवीक्षनयेग्लानी ॥
 आहील्यची काहणी वेदीपुराणी वणीजि ॥ १ ॥ नारदना
 येके मासी गोवी ॥ त्यासी जन्मलपुत्र साटी ॥ मासी साहीस
 के गावी ॥ साबकी या सुष्टी ॥ आसना ॥ कथा जो ब्रह्मच
 र्यामाजी गाजा ॥ हनुमंत मी नवी पैजा ॥ साही स्तवमके न
 ध्वजा ॥ संगवीण बोजा ॥ साबकी का मी या ॥ २ ॥ कलुंकी या
 यहा ॥ मंगा कीत के काई ॥ साही टीयातला शम्भु खवीन ॥
 जो लाडी का कुमन महेश ॥ या ॥ ३ ॥ मजमनमथाचा यावा ॥
 नसंवने देवो दानवा ॥ मातेथे ईत नमानवां ॥ कोण के वासा
 छाव्यासी ॥ ४ ॥ मजजावी वे महेश ॥ सा संभ्या अनुरे के
 वेपीस ॥ नवलधारीष्टनु श्याऐसे ॥ जाहातानदीसे ॥ ती
 हीळीकी ॥ था ॥ सा मजका मानसनेते के ॥ शाही चकल्याण

(1)

॥११॥

पाहीले॥ हेतुवाची येक केळे॥ त्वभावाजी कीले॥ नीज
शाही योगी॥ १०॥ तो नी न सनता केळा काम॥ कोधा आ-
णी को उपवास नवा संभ्रम॥ नी सभ्रम॥ पै केळा॥ ११॥
हेना ना येणा तुझी नीष्टा॥ केळा अनुभवाचा दटा शाही
चा मोटा॥ सुका ह केळा॥ १२॥ भागात पश्वी वाखाणल
ह्यणवी काम को धली कीले॥ शाही आही पुरण छ-
ले॥ १३॥ अके ते भले॥ सुभने १४॥ कपीळा ऐसा नै जाम
सी॥ को धेत हा छे छे पासी॥ शाप दंतों सग नासी॥ १५॥
तोही को धासी वष्य जाकी॥ १६॥ को प आळा ना उदा-
सी॥ वृक्ष केळे नष्ट कुमारी॥ गेत मे आही लेसी॥ को प-
वे न वासी॥ वीळा केळी॥ १७॥ जो सर्व दावी धाते अकळी
सावी धं शांन को ध छळी॥ तेण अतिकोप को पान छळी॥ अ-
प्रासीत हाळी॥ शाप दी धत्ता॥ १८॥ को प आळा दुवें सासी॥

शाप दी धला अबरु की ॥ देवो आली कागर्भ वासी ॥ को
 धे मा हां रु की ॥ छुकी के है स ॥ ११॥ जे दु जी श्रु की कर
 सकती ॥ ने ही काम को धे सउ पे जे दी ॥ सा गरी पडे स्वर्ग
 स्वपती ॥ हे को धाची रवाती नान प्रसीध ॥ १२॥ इति न
 ची गोवी को ये सी ॥ को ध छुकी कर्ष श्व ना सी ॥ ते ने दी
 इती तं द्वी ज द क्षा सी ॥ सी न उ दा सी क न ता जाला ॥ १३॥
 जे थ सी का नी श्व ये व से ॥ ते को ध व से सा व का रें ॥
 काम को ध अ सं तु ची न सा ॥ ना ना ये न है से के ले तु वां ॥
 ॥ १४॥ हे प न मा द सु त तु स वी र्य ॥ आ जी कां ये क दे न
 ही धी र्य ॥ पा को गी तु से प री च र्य ॥ स दा मु नी व र्य ॥ से वी
 नी च न न ॥ १५॥ शा ती ची चा डे दे वा धी दे वा ॥ जे नी स करी
 नी तु स्ती से वा ॥ ते का न को धा दी श्व भा वा ॥ स्म न ता तु क्षा
 ना वा ॥ जी की ती शु र्वे ॥ १६॥ जे यें स न्मा ने काम पु न ता ॥

तेथें अदनें अनुग्रह करीता ॥ काम असन्मानें जे ये अशुभा
 तेथे साप देता ॥ आती कोधें ॥ ५॥ थाळागी रागपानुग्रह स
 मर्थ ॥ ते सर्व दो काम कोध युक्त ॥ परी न वळतु से सत्तोयी
 न ॥ केल अकीत काम कोध ॥ १॥ तुज माजी नीवी काउ शा
 नी ॥ हे नवल न के दसा मुती ॥ तुझ्या स्वरुपाची छिनी ॥
 आजो नी श्रीती कळवें ॥ २॥ तुनी गुण नी नापम
 माया तीत पुण अहं ॥ तुज स्वभावे समनता नाम ॥ सका ॥ ५॥
 माही काम ॥ स्पशौ न सदे ॥ ३॥ जे धीन बीन नी जशा ती
 ज्या सीपन मान दे नी सुचुता ॥ ये सीया ये अमी सुपती
 पुथाळा गती ॥ तुसी या ॥ ४॥ तुज कना वधान मुस्कार
 देसे ना हा सीध्या या संभातु ॥ सुसी ही नळगे अव
 श्वर ॥ तुपना सुरुपन मासा ॥ ५॥ तुसी या सव का कडे
 मो धन वता हो ये बापु हो ॥ नेरी या वया तुज पुढे ॥ कोण

॥ ५॥

॥ ५॥

पडी पाटें ॥ रीचल ॥ २५ ॥ श्लोक ॥ ब्राह्मे वतां मुनस्तता ब
हवो तनाया ॥ स्वो कोपिल ध्यमेप नम ब्रज तों पदते ॥ नान्य
स्ये बही पिबलिन्द दत ॥ स्वभागान्यते पदतु मविता थदी
वीधुमुद्धी ॥ १० ॥ टीका ॥ ता म सा बहु वीधु आपा वो ॥
आह्मी क ना वया आत न वो ॥ हा आ सु चानी ज श्व भा वो ॥
न के न वला वो तो ना रा से भा ॥ १० ॥ ते व्या मु ची वी धु रूडी ती
ने चल तु स्या भक्ता प्रती ॥ न के सी ता भक्त पती ॥ ते थे वी
आ चो गती ॥ प्राश् मु य न दा ॥ ११ ॥ भा सी या नी ज भक्ता
सी ॥ वीधु के ची सा सी ह्युण सी गये के हा ही आ भी प्रा था
सी ॥ सा गा न तु ज सा सी दे वा धी दे वा गथा ॥ पा वा व या नी ज
पदा त ॥ ला ता हा णो नी स र्म भा गा ते ॥ जे नी सु नी ष्वा म म
ज ती तु ते ॥ ना ना वी च हा त ॥ सु न व न न ची ती ॥ १२ ॥ उल घु नी

आमुते ॥ ते पावती आ-युत पदात ॥ उल्लुखी आ-युत
 आकाशी सुनवन साते ॥ आती की धाते प्रेरीती ॥ ११ ॥ बहू
 नेदुनी आ-हासी ॥ हा जाउ पाहाती पुण पदासी ॥ यण सो भ
 ईश्वरी क हा पासी ॥ ना ना की धासी मो क की ती ॥ १२ ॥ या का
 गी धा-या भ ज ना पासी ॥ दी धा-यु धावती अपेसी ॥ वी धी
 भउ न वहासी ॥ तु देवी के री न क्षीता ॥ १३ ॥ सा दुनी स
 काम के जपना ॥ जे न त ले तु सी या-यनणा ॥ हा सही आव ॥ १४ ॥
 ही प्रह न जाणा ॥ तु ना या-यनणा न क्षीसी ॥ १५ ॥ भ क वी धी हा
 नी का सावीसी ॥ धावे धावे ह्यण र वी के री ॥ ते का तु धावणा
 धावेंसी ॥ हे सानी पुन न के री ना न यणा ॥ १६ ॥ वी धन युतां
 भ क पासी ॥ आधी न भ क संरक्षणा सी ॥ तु म का या-यो पा
 सी ॥ आही न र्ग वी सी न क्षीता ॥ १७ ॥ वी धा-यु धाव संकोप ॥

७
 ॥ १३ ॥

(6A)

न व वीधी प्रगट तु संस्वरुप ॥ या कागी भक्ता सी अज्य ॥ वी
धु प्रताप ॥ बाधु न सके ॥ ४० ॥ वीधु उ पज वी वीने ध ॥ न व
वीने धा स बाह्य गो वीद ॥ मग वीने धता ची मा हा बो ध ॥ स्वा
कंद ॥ नीज भक्ता ॥ ४१ ॥ ज्या सी तु से च न जी भा वार्थ ॥ हा सी
वीधि प्रगट प न मा र्थ ॥ ४२ ॥ सा भा वे बढ तु समर्थ ॥ स बाह्य
संतत नीज भक्ता ॥ ४३ ॥ थ प री स्व म र्थ तु सो न क्षी ता ॥ ते जी गो
नी वी धा स म स्ता ॥ पा व नी दे व नी ई द्रा यी ये मा था ॥ पा व नी
प न म्मा र्थ ॥ तु सी या स्त पा ॥ ४४ ॥ दे व सं न क्षी ता ज्या सी ॥ ते जी
प्मा नी वी धा स म स्ता ॥ पा व नी दे व नी ई द्रा यी ये मा था ॥ पा व नी
प न म्मा र्थ ॥ तु सी स्त पे ॥ ४५ ॥ वीधु उ धा व ति या पा सी ॥ मा
स का हा ची ग ती का र्थ सी ॥ वी दे हा ह्य ण सी ते पे को ॥ ४६ ॥
वी ष ये का म ध नु नी म नी ॥ ई द्रा दी दे वां ब की पु ज नी ॥ जे भ
ज ले या ग य ज नी ॥ दे व हा वा गु नी ॥ न करी ती वी धु ॥ ४७ ॥

इन्द्राणीकाचानाजा॥सकामधाणीकदेवाच्याप्रजा॥
 यक्षभागआवीतीवोजा॥पावळीबळीपुजा॥नकरीतीवी
 चे॥४॥ध्वणसीकामादीकवीचवती॥तेनीष्कामकदा
 नातळती॥सहजकामासीवष्यआसती॥सदाकर्म
 करीती॥सकाम॥जुजेमजकामासीवष्यहोती॥तेतप
 वेचुनीभोगभोगीनी॥जेआमुडलेकोधाचहोती॥तेवृ
 थाणागवती॥नपासी॥४॥लोका॥सुवृद्धिकाहगुण॥१११॥
 गुणभारतजेहयेरः॥आनमानपरीजळधीनति
 तीर्यकेचीतः॥कोधस्यपातिवीकहस्यवर्षपदगः
 मज्जतीदुश्चतपश्चवृथोहजंती॥११॥टीका॥४॥
 प्रणायामप्राणपानी॥नीजप्राणानकळुनी॥वातस्पर्श
 शीतगुणसाहानी॥जेअनुष्टानी॥वीगुतले॥४॥सु
 धचृदातेनेमुनी॥जीव्हाशीअकळुनीमजकामाते

१११॥

७४

जीतीले मानुनी गठ नमता ॥ १६० ॥ ते व्यव्य आप भानी होती
 जिको धासी वष्ये होती ॥ ते शाप देउनी तप संपत्ती ॥ व्यर्थ न
 गवती नीज कष्टा ॥ १६१ ॥ सका कामाच्या अनुष्ठाना ॥ मज
 काम संगे श्रकंदना ॥ भोग भोगी ती स्वर्गागना ॥ अमृत प
 ना प्राप्ती ती ॥ १६२ ॥ हा मजे कामा ते उषेक्षी ती ॥ आणी जिको
 धासी वष्य होती ॥ ते नीज पद नागवी ती ॥ दापो पदीसी ॥
 आनुवाद ॥ १६३ ॥ जे आपाव सांग नुनती ॥ जे गोरुरोदकी
 बुडती ॥ ते नी मज कामा ते जीजा नीजा ती ॥ ते ही ना गवती
 नीज कोध ॥ १६४ ॥ मज कामाची आपुर्ण कामवृत्ती ॥ तेची
 कोधाची दृढ स्वीती ॥ काम कोधाचा भक्त प्रीती ॥
 ॥ हरी भक्ता प्रती ॥ ते नचवे ॥ १६५ ॥ तुझ्या नीज भक्ता प्रती
 जाण ॥ नचवे काम कोधी बधन ॥ तो तुभक्त पतीना
 येण ॥ तुज आमुये कामी ननवाधी ॥ १६६ ॥ नेणता तुझा म

हीमा ॥ आक्षी कर्तुं आवो नी ज धर्मा ॥ तुज पा सी नी
ज नी स दे मा ॥ पु नु शो त मा रू पा लु वा ॥ ८७ ॥ श्लोक ॥

इ ती प्र गृ ण ता ते कां षां ॥ स्त्री या ये द म्भु त द र्श नि ॥ द
र्श या मा स शु श्रू षा षां च यी ताः कु र्व ति वी ष्णु ॥ १५ ॥
दी का ॥ ८८ ॥ अ प का यं उ प का न क नी नी ॥ या ना व नी

नी ज वी का न रं शां ती ॥ ते वी शां ती यी प री पा क र्छी ती ॥ वी ष्णु ॥ १६ ॥

११९५॥

कै ला प्र ती ह नी दा वी ॥ ८९ ॥ सा गे नी यां आ पु ण्नी र्छी ती
को मा दी क स्तु ती क री ती ॥ त व प न मा श्र य दे र व ती ॥ स्त्री
या अ ये द म्भु ती ॥ अ क स्मा त ॥ ९० ॥ रु प वै भ व आ रं का
न ॥ श्री ये हो उ नी शु द न ॥ से वे ला गी अ ती त म न ॥ स दा
सा द न सा व धा न ॥ ९१ ॥ न व छ वा ध ले ना ना ये णा ॥ कै
आ म या दा र व वी ल वी दा षा ॥ सा स्त्री या र वा ली स्व गा
ग नी ॥ दी वा र व द्यो त जा णा ॥ ते र या दी स ती ॥ ९२ ॥

श्लोक ॥ ६॥ ते देवानुच नादृष्टी ॥ स्त्री ये श्री रिव श्वत
 पी जीः गद्येन मुमुहुस्ता सां सपोदाय दहत ॥ श्रिये ॥ १॥
 टीका ॥ ६॥ सा स्त्री या देखोनी दीवी ॥ काम मुच्छति पडी
 ला शृष्टी ॥ वसत चट चट वाह कोटी ॥ क्रोधा चीदृष्टी
 तट स्त वैली ॥ ६॥ १॥ म न वी स न ला स्रण कान ॥ को की ला
 वी स न ला पंच मे श्व न ॥ प्राण वी स न ला सं चान ॥ देवानुच न
 मुल ले ॥ ६॥ देखोनी या ची या श्वनुपासी ॥ अप स न दी
 सती जे स्या दासी ॥ अता त उ ज्जा जाली सासी ॥ तीही
 म सी उ त न ल्या ॥ ६॥ सु च म अ गी च्या सु ग ध व स तु
 ने ण मुल ला व स तु ॥ मह या नी ल आ ला भा तु ॥ सा यी
 आं ग वा तु ॥ ला ग तां ॥ ६॥ ना न ये णा ची वी द्या कै सी ॥ जे
 सु ल उ आ ल्या आ प णा सी ॥ भु ला पा डी ली त या सी ॥ ये
 ग भा ये सी दा उ नी ॥ ६॥ सु द न ह न भा ती को त म ॥ ह्य म ड

म ॥ अथ नीजी नीलया नमो ॥ न मे हाठ नी यां उ न मा ॥ उ न मो
 न मा अती नु पे ॥ ६७ ॥ श्लोक ॥ ६८ ॥ ता ना ह देव देव रा
 प्रण ता न्प्र ह स न्नी वा ॥ अ सो मे क त मा वृ ध्यं ॥ स
 वर्ण स्व र्गि नु रा णा ॥ ११ ॥ ६९ ॥ टी का ॥ ते आ श्रय र्द
 खो न ॥ जा के का मा ही क नु छ पि न ॥ तथा प्र ती ना ना य ण
 को ये हा सो न बो की व ॥ ६९ ॥ आ ह्मी अव ष्ये पु ला वे तु ॥ ११५ ॥
 ह्मा सी ॥ का ही आ र्पा दि व र्ण दा न सी ॥ सं तो दा वा वृ य ॥ ११५ ॥
 अ म ने द्रा सी ॥ या नी व र्ण क दा सी ॥ अं गी का ना तु ह्मी ॥ ६९ ॥
 या ये सु द र्य अ हं त थो न ॥ ह्मा ल हो र्छ क अ प मा न क न
 तु ह्मा स मा न जे सु द न ॥ नी या अ गी का न ॥ क ना वा तु ह्मी
 ॥ ११० ॥ ह्मा ल या तु ना ही ही म ॥ अव द्या सु द र्य सु पु र्ण
 को णी न दी से आ ह्मा स मा न ॥ कै वी अ प ण अ गी का ना
 यी ॥ १११ ॥ त ही ना ही तु ह्मा स मा न ॥ स क छ सु द र्य अ ती

७

॥ ११५ ॥

सपन्न॥ तहं ये कीचेक नावे वनण॥ होठल भुगण श्वर्ग
 सी॥ ७५॥ औसना नायेण वचन॥ औकोनी हरीखलीस
 पुण॥ कनुणी साष्टगन मन॥ मस्तकी वचन वदीले॥ ७६॥
 ठोके॥ ७७॥ **मिसा देस मायेः न हांत सुन वदीनः**
उर्वसी मसनः श्रेष्ठाः पुनस्तसे दिव्य यु॥ ७८॥ टीका॥ ७९॥
 औकोन ना नायेण वचन॥ मस्तका डुल्ली करनी न मन॥
 उर्वसी पुढां सुन॥ काभारी म॥ नीचे वेगी॥ ७९॥ ते देवा
 चे देव दुत॥ श्वर्ग पावदे समस्त॥ मग राका चे समेष्ठां
 त॥ सागती अस्सुत॥ ना नायेण राती॥ ७५॥ ते ही ना नाये
 णाचे चरीत्र॥ सागीत के आनी पवीत्र॥ तेण अवघची सुन
 वना॥ जाल थोत्र॥ आती वीश्मीत॥ ७६॥ हे प्रयमा ता न वाता
 जे कां न ना नायेण कथा॥ पुढील अवता न आता॥ नृपना
 नाथा॥ आवधारी॥ ७७॥

ॐ क ना था आ ती आ पु र्वा ॥ छ छ वा दी आ पुं जा स कीं
 ॥ क तु नी दा ख वी श्व मे वे ॥ पु र्णानु वे या ना वे ॥ ७७ ॥ अं शे का ॥ ७८ ॥
 भा वे क री ता भ ग व स्म ज न ॥ या प री ई द्र क न वी वी धू ॥ ना ना
 ये ण ये त न्ये य न ॥ वी धू स तु ण पि रा भ वी ली ॥ ७९ ॥ भा वा ल्या
 मो ल्या क री ती म की ॥ ॐ सी वी धू जे छ छुं ये ती ॥ ते क दान
 कृ भ ग व ह्मा सी ॥ ॐ सा वी क न्या ची ती ॥ स ण ध री सी ॥ ८० ॥
 ॥ ५७ ॥ ॐ आ दी का दी सर्व भु ता ॥ भृ ग दी भा जे जो नी ये ता ॥ या भ ग ॥ ५७ ॥
 व ता ते भ ज तां ॥ वी धू सर्व था ॥ न स क ती बा धु ॥ ८१ ॥ ज्या
 नी ये ई रा सी ई द्र प ण ॥ तो भा वे भ ज ता ना ना ये ण ॥ भ का सी
 वी धू क री को ण ॥ ह री न क्ष ण नी ज भ का ॥ ८२ ॥ ई द्र मु र्व्य
 छ का मा दी क ॥ वी धू छ छ ती सर्व लोक ॥ सा चा ही ना ना ये ण
 चा छ क ॥ तो भ का सी दे ख ॥ स्प रो नि दी ॥ ८३ ॥ वी धू सी भु

लवीकें जे जे ॥ तो नीस स्मरतां ना ना येण ॥ आप धाके
 पव्हर्ति जाण ॥ भक्त संरक्षण ॥ हरी नामे ॥ ८॥ कना व
 या नीज भक्त कै वारी ॥ देव धरी ना ना वता ॥ साचे आ
 वता नाचे चेरी ॥ धनी वीची जे आव धारी ॥ ९॥ नीस
 स्मरता हरीच नाम ॥ मा हावी घुहा नी भस्म ॥ घाचा अ
 वता न संभ्रम ॥ उत मोत न आव धारी ॥ १०॥ श्लोक ॥ १॥
 हंस स्वरूप वदत च्युत ॥ गंग ॥ दतः कुमार अपभो
 मग वासितानः वीर्य ॥ श्री वीर्य जगतां कलुषावति
 ॥ १॥ स्तेना हता मधु मिदा भवयो हया स्या ॥ ११॥ टीका
 ॥ सन कादी के अं हन दन ॥ नी ही पीसा सी केळा प्रष्ण
 प्रष्ण खंडण मी से जाण के ल ब्रह्म ज्ञान ॥ हंसावतारी ॥ १२॥
 ज्याचे नी नामें पल्लव दात ॥



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com